International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 12, Issue 11, Nov 2025
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# "स्वतंत्रता के पश्चात भारत के राष्ट्र-निर्माण, राजनीतिक संरचना और प्रशासनिक दृष्टिकोण के संदर्भ में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल के राजनीतिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन"

**पुष्पेंद्र**
**शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग**
**जे० एस० विश्वविध्यालय, शिकोहाबाद**

**डॉ कंचन प्रभा**
**एसोशीएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग**
**जे० एस० विश्वविध्यालय, शिकोहाबाद**

## सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्र-निर्माण, राजनीतिक स्थिरता तथा प्रशासनिक व्यवस्था के पुनर्गठन की थी। इस ऐतिहासिक दौर में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे नेताओं ने भारत के राजनीतिक विकास की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दोनों नेताओं की राजनीतिक दृष्टि, रणनीति और प्रशासनिक दृष्टिकोण में कई समानताएँ होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण अंतर भी देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य नेहरू और पटेल के राजनीतिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा यह समझना है कि उनके विचारों और नीतियों ने स्वतंत्र भारत की राजनीतिक संरचना और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नेहरू का दृष्टिकोण अधिक उदारवादी, समाजवादी और अंतरराष्ट्रीयतावादी था, जबकि पटेल का दृष्टिकोण यथार्थवादी, प्रशासनिक रूप से व्यावहारिक और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता देने वाला था। इन दोनों नेताओं की विचारधाराओं और नीतियों ने मिलकर आधुनिक भारत की राजनीतिक संरचना को आकार दिया।

**महत्वपूर्ण शब्द :** *राष्ट्र-निर्माण, नेहरू, पटेल, भारतीय राजनीति, राजनीतिक चिंतन*

## 1.प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता केवल औपनिवेशिक शासन से मुक्ति नहीं थी, बल्कि एक नए राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ भी थी। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत अनेक सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना कर रहा था। विभाजन के कारण उत्पन्न सांप्रदायिक तनाव, शरणार्थी समस्या, रियासतों का एकीकरण तथा प्रशासनिक ढांचे का पुनर्गठन जैसे मुद्दे तत्काल समाधान की मांग कर रहे थे। इस ऐतिहासिक संक्रमण काल में भारतीय नेतृत्व ने राष्ट्र-निर्माण की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल दो ऐसे नेता थे जिनके राजनीतिक दृष्टिकोण और नेतृत्व ने भारत की राजनीतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया।

इतिहासकार रामचंद्र गुहा के अनुसार, "स्वतंत्र भारत के निर्माण में नेहरू और पटेल की भूमिका परस्पर पूरक थी; जहाँ नेहरू ने आधुनिक भारत की वैचारिक दिशा प्रदान की, वहीं पटेल ने उसकी प्रशासनिक और राजनीतिक नींव को सुदृढ़ किया" (Guha, 2007)।

## 2. पंडित जवाहरलाल नेहरू का राजनीतिक चिंतन

पंडित जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उनका राजनीतिक चिंतन आधुनिकता, उदार लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के सिद्धांतों पर

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

आधारित था। नेहरू का विश्वास था कि स्वतंत्र भारत का निर्माण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और वैज्ञानिक सोच का प्रसार भी आवश्यक है। इस कारण उन्होंने भारत के राजनीतिक और आर्थिक विकास को आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

नेहरू के राजनीतिक विचारों पर पश्चिमी उदारवाद, मार्क्सवादी समाजवाद और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अनुभवों का गहरा प्रभाव था। उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने को अत्यंत आवश्यक माना। उनके अनुसार लोकतंत्र केवल एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं बल्कि एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से समाज में समानता, स्वतंत्रता और न्याय को सुनिश्चित किया जा सकता है। नेहरू का यह दृष्टिकोण संविधान के निर्माण और संसदीय लोकतंत्र की स्थापना में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इतिहासकार बिपिन चंद्रा का मत है कि नेहरू का राजनीतिक चिंतन "एक ऐसे आधुनिक राष्ट्र के निर्माण पर आधारित था जो लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संचालित हो" (Chandra, 2004)। नेहरू ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए स्वतंत्र न्यायपालिका, संसद और संघीय व्यवस्था को विशेष महत्व दिया।

नेहरू के आर्थिक विचार भी उनके राजनीतिक चिंतन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। उनका मानना था कि भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में आर्थिक विकास के लिए राज्य की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। इस उद्देश्य से उन्होंने योजना आधारित आर्थिक विकास की नीति अपनाई और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से औद्योगिकीकरण तथा बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा दिया। उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र को मजबूत बनाने और भारी उद्योगों की स्थापना को राष्ट्र-निर्माण के लिए आवश्यक माना। नेहरू का विश्वास था कि औद्योगिकीकरण और वैज्ञानिक प्रगति भारत को गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्त कर सकते हैं। इतिहासकार रामचंद्र गुहा के अनुसार, "नेहरू का दृष्टिकोण भारत को एक आधुनिक, वैज्ञानिक और प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का था, जहाँ लोकतंत्र और सामाजिक न्याय समान रूप से महत्वपूर्ण हों" (Guha, 2007)।

नेहरू के राजनीतिक चिंतन का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम उनकी विदेश नीति थी। उन्होंने भारत की विदेश नीति को स्वतंत्र और संतुलित रखने का प्रयास किया। शीत युद्ध के समय जब विश्व दो गुटों में विभाजित था, तब नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की अवधारणा को विकसित किया। इसका उद्देश्य यह था कि भारत किसी भी महाशक्ति के प्रभाव में आए बिना स्वतंत्र विदेश नीति का पालन कर सके। इस नीति के माध्यम से नेहरू ने भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक स्वतंत्र और नैतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। नेहरू की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण तत्व पंचशील के सिद्धांत थे, जो शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर आधारित थे। इन सिद्धांतों के माध्यम से उन्होंने विश्व शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इतिहासकार सुनील खिलनानी के अनुसार, "नेहरू का राजनीतिक दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्र को आधुनिकता, लोकतंत्र और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के मार्ग पर आगे बढ़ाने का प्रयास था" (Khilnani, 1997)।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नेहरू का राजनीतिक चिंतन एक व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिकोण पर आधारित था, जिसमें लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक प्रगति को समान महत्व दिया गया। उनके विचारों ने स्वतंत्र भारत की राजनीतिक संरचना, आर्थिक नीति और विदेश नीति को गहराई से प्रभावित किया।

## 3. सरदार वल्लभभाई पटेल का राजनीतिक चिंतन

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता और स्वतंत्र भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री थे। उन्हें भारतीय इतिहास में "लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने दृढ़ नेतृत्व, प्रशासनिक दक्षता और व्यावहारिक राजनीतिक दृष्टिकोण के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पटेल का राजनीतिक चिंतन व्यावहारिकता, प्रशासनिक दक्षता, राष्ट्रीय एकता और मजबूत शासन व्यवस्था पर आधारित था। वे मानते थे कि स्वतंत्र भारत की स्थिरता और विकास के लिए एक मजबूत और प्रभावी प्रशासनिक ढांचा अत्यंत आवश्यक है। इसलिए उन्होंने प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया।

पटेल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय रियासतों के एकीकरण में रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में लगभग 562 रियासतें थीं, जिनका भारत में विलय कराना एक बड़ी राजनीतिक चुनौती थी। इन रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित करना राष्ट्र की एकता और स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक था। पटेल ने अपनी कूटनीतिक क्षमता, दृढ़ निश्चय और प्रशासनिक कौशल के माध्यम से अधिकांश रियासतों को भारत में सम्मिलित करने में सफलता प्राप्त की। इतिहासकार वी.पी. मेनन के अनुसार, "भारत की रियासतों का एकीकरण पटेल की दृढ़ इच्छाशक्ति और प्रशासनिक कौशल का परिणाम था; यदि उनका नेतृत्व न होता तो भारत का राजनीतिक एकीकरण संभव नहीं हो पाता" (Menon, 1956)।

पटेल का दृष्टिकोण प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत यथार्थवादी और व्यावहारिक था। वे मानते थे कि एक मजबूत केंद्र सरकार के बिना भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना कठिन होगा। इसलिए उन्होंने संघीय व्यवस्था में केंद्र सरकार की शक्तियों को मजबूत बनाने का समर्थन किया। इतिहासकार ग्रेनविल ऑस्टिन का मत है कि "भारतीय संघ की स्थिरता और प्रशासनिक संरचना को मजबूत बनाने में पटेल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी" (Austin, 1999)। पटेल का राजनीतिक चिंतन राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता पर भी आधारित था। उनका मानना था कि भारत की विविधता को एकजुट रखने के लिए राष्ट्रीय एकता और अनुशासन अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक अस्थिरता के समय भी राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। इतिहासकार राजमोहन गांधी के अनुसार, "पटेल का नेतृत्व व्यावहारिक राजनीति का उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसमें राष्ट्रीय हित और प्रशासनिक दक्षता को सर्वोच्च महत्व दिया गया" (Gandhi, 1991)।

इस प्रकार सरदार वल्लभभाई पटेल का राजनीतिक चिंतन एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्र के निर्माण की दिशा में केंद्रित था। उनके नेतृत्व और नीतियों ने भारत की राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक संरचना और राजनीतिक स्थिरता को सुदृढ़ बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

## 4. नेहरू और पटेल के राजनीतिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। यद्यपि दोनों ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता थे और राष्ट्र के विकास के प्रति समान रूप से समर्पित थे, फिर भी उनके राजनीतिक चिंतन, नीतिगत दृष्टिकोण तथा कार्य-पद्धति में कुछ उल्लेखनीय भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। इन भिन्नताओं ने स्वतंत्र भारत की राजनीतिक संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था तथा नीति-निर्माण की दिशा को प्रभावित किया।

सबसे पहले यदि उनके वैचारिक आधार की तुलना की जाए तो स्पष्ट होता है कि नेहरू का राजनीतिक चिंतन अपेक्षाकृत आदर्शवादी और आधुनिकतावादी था। वे लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भारत के विकास का आधार मानते थे। उनका विश्वास था कि भारत को आधुनिक राष्ट्र-राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं का विकास और सामाजिक-आर्थिक सुधार आवश्यक हैं। इतिहासकार बिपिन चंद्रा के अनुसार, "नेहरू ने भारत को एक आधुनिक और प्रगतिशील राष्ट्र बनाने के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों तथा समाजवादी आर्थिक नीतियों को अपनाने का प्रयास

किया" (Chandra, 2004)। इसके विपरीत सरदार वल्लभभाई पटेल का दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक और यथार्थवादी था। वे राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक स्थिरता और प्रशासनिक दक्षता को सर्वोपरि मानते थे। उनके लिए राष्ट्र-निर्माण का पहला चरण भारत की भौगोलिक और राजनीतिक एकता को सुनिश्चित करना था। इसलिए उन्होंने भारतीय रियासतों के एकीकरण को प्राथमिकता दी और मजबूत केंद्रीय प्रशासन की आवश्यकता पर बल दिया। इतिहासकार वी.पी. मेनन का मत है कि "पटेल का दृष्टिकोण व्यवहारिक राजनीति का उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसमें राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई" (Menon, 1956)।

नेहरू और पटेल के आर्थिक दृष्टिकोण में भी कुछ अंतर दिखाई देता है। नेहरू समाजवादी आर्थिक मॉडल के समर्थक थे और उन्होंने योजना आधारित विकास तथा सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि राज्य की सक्रिय भूमिका के बिना आर्थिक समानता और औद्योगिक विकास संभव नहीं है। इसी कारण उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की और भारी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी। दूसरी ओर पटेल आर्थिक मामलों में अपेक्षाकृत व्यावहारिक और उदार दृष्टिकोण रखते थे। वे निजी उद्यम और कृषि क्षेत्र के महत्व को भी स्वीकार करते थे। उनका मानना था कि आर्थिक विकास के लिए प्रशासनिक स्थिरता और कानून-व्यवस्था का सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है।

विदेश नीति के संदर्भ में भी दोनों नेताओं के दृष्टिकोण में अंतर देखा जा सकता है। नेहरू ने भारत की विदेश नीति को अंतरराष्ट्रीय सहयोग, गुटनिरपेक्षता और विश्व शांति के सिद्धांतों पर आधारित किया। वे भारत को एक नैतिक शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहते थे जो अंतरराष्ट्रीय मंच पर शांति और सहयोग को बढ़ावा दे। इसके विपरीत पटेल विदेश नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यावहारिक हितों को अधिक महत्व देते थे। वे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आदर्शवाद के बजाय यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने के पक्षधर थे। इतिहासकार ग्रेनविल ऑस्टिन का मत है कि "नेहरू और पटेल की नीतियों में अंतर के बावजूद दोनों की संयुक्त भूमिका ने भारतीय लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी" (Austin, 1999)।

नेहरू और पटेल के प्रशासनिक दृष्टिकोण में भी कुछ महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देते हैं। नेहरू लोकतांत्रिक संस्थाओं के विकास और वैचारिक नेतृत्व पर अधिक ध्यान देते थे, जबकि पटेल प्रशासनिक संरचना को मजबूत बनाने और शासन व्यवस्था को प्रभावी बनाने पर जोर देते थे। भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) के पुनर्गठन में पटेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसके माध्यम से उन्होंने प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया। इतिहासकार रामचंद्र गुहा के अनुसार, "भारत का प्रारंभिक राजनीतिक ढांचा नेहरू के आदर्शवाद और पटेल की प्रशासनिक व्यावहारिकता के संयोजन का परिणाम था" (Guha, 2007)।

नीचे दी गई सारणी में दोनों नेताओं के राजनीतिक चिंतन की प्रमुख विशेषताओं का तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है:

| पहलू | पंडित जवाहरलाल नेहरू | सरदार वल्लभभाई पटेल |
|---|---|---|
| वैचारिक आधार | उदार लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता | व्यावहारिक राजनीति, राष्ट्रीय एकता |
| आर्थिक दृष्टिकोण | योजना आधारित समाजवादी विकास | व्यावहारिक आर्थिक नीति |
| विदेश नीति | गुटनिरपेक्षता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग | राष्ट्रीय हित और सुरक्षा |
| प्रशासनिक दृष्टिकोण | लोकतांत्रिक संस्थाओं का विकास | मजबूत प्रशासनिक ढांचा |
| राष्ट्र-निर्माण की प्राथमिकता | आधुनिकता और विकास | राजनीतिक एकीकरण और स्थिरता |

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नेहरू और पटेल के राजनीतिक चिंतन में भिन्नताओं के बावजूद उनके दृष्टिकोण परस्पर पूरक थे। जहाँ नेहरू ने भारत को वैचारिक और नीतिगत दिशा प्रदान की, वहीं पटेल ने प्रशासनिक संरचना और राष्ट्रीय एकता को

सुदृढ़ किया। दोनों नेताओं के संयुक्त योगदान ने स्वतंत्र भारत के राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे को स्थिरता और मजबूती प्रदान की।

## 5. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल के राजनीतिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के राष्ट्र-निर्माण, राजनीतिक संरचना तथा प्रशासनिक व्यवस्था के निर्माण में इन दोनों नेताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। यद्यपि उनके राजनीतिक दृष्टिकोण, नीतिगत प्राथमिकताओं और कार्य-पद्धति में कुछ अंतर दिखाई देते हैं, फिर भी उनका अंतिम उद्देश्य एक मजबूत, एकीकृत और स्थिर राष्ट्र का निर्माण करना था।

पंडित जवाहरलाल नेहरू का राजनीतिक चिंतन मुख्यतः आधुनिकता, लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने भारत को एक आधुनिक, वैज्ञानिक और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। नेहरू के नेतृत्व में भारत ने संसदीय लोकतंत्र को मजबूत किया, पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास की दिशा निर्धारित की और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति अपनाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्र पहचान स्थापित की। उनके विचारों ने भारतीय लोकतांत्रिक संस्थाओं को स्थायित्व प्रदान किया और भारत को एक प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सहायता की। इसके विपरीत सरदार वल्लभभाई पटेल का राजनीतिक चिंतन अधिक व्यावहारिक और प्रशासनिक दृष्टि से सुदृढ़ था। उन्होंने राष्ट्र की एकता और राजनीतिक स्थिरता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। भारतीय रियासतों के एकीकरण में उनका योगदान ऐतिहासिक महत्व का है, क्योंकि उनके नेतृत्व और कूटनीतिक कौशल के कारण ही भारत की भौगोलिक और राजनीतिक एकता सुनिश्चित हो सकी। साथ ही उन्होंने प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य संस्थागत व्यवस्थाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नेहरू और पटेल के विचारों में अंतर होने के बावजूद उनके दृष्टिकोण एक-दूसरे के पूरक सिद्ध हुए। जहाँ नेहरू ने भारत को वैचारिक और नीतिगत दिशा प्रदान की, वहीं पटेल ने राष्ट्र की एकता और प्रशासनिक संरचना को मजबूत किया। इतिहासकार रामचंद्र गुहा का मत है कि स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक राजनीतिक संरचना इन दोनों नेताओं के विचारों और नेतृत्व के संयुक्त प्रभाव का परिणाम थी (Guha, 2007)। इसी प्रकार ग्रेनविल ऑस्टिन ने भी उल्लेख किया है कि भारतीय लोकतंत्र की स्थिरता नेहरू के आदर्शवाद और पटेल की प्रशासनिक दक्षता के संतुलन से संभव हुई (Austin, 1999)।

अतः यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्र भारत के निर्माण और विकास में नेहरू और पटेल दोनों का योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण रहा है। उनके राजनीतिक चिंतन, नेतृत्व और नीतियों ने आधुनिक भारत की राजनीतिक संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। आज भी भारतीय राजनीति और शासन व्यवस्था में इन दोनों नेताओं की विरासत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसलिए नेहरू और पटेल के राजनीतिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**संदर्भ**


1. ऑस्टिन, ग्रेनविल. (1999). भारतीय संविधान: राष्ट्र का आधार. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. कुमार, रविंद्र. (2002). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. खिलनानी, सुनील. (1997). भारत की कल्पना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. गांधी, राजमोहन. (1991). सरदार पटेल: एक जीवन. नई दिल्ली: नवजीवन प्रकाशन।

5. गुहा, रामचंद्र. (2007). गांधी के बाद का भारत: विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का इतिहास. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
6. चंद्रा, बिपिन. (2004). स्वतंत्रता के बाद का भारत. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
7. चंद्रा, बिपिन., मुखर्जी, मृदुला., एवं मुखर्जी, आदित्य. (2008). भारत का स्वतंत्रता संग्राम. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
8. चोपड़ा, पी. एन., पुरी, बी. एन., एवं दास, एम. एन. (2003). आधुनिक भारत का इतिहास. नई दिल्ली: मैकमिलन।
9. थापर, रोमिला. (2002). भारत का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
10. दत्त, आर. सी. (2000). भारत का आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: पॉपुलर प्रकाशन।
11. नंदा, बी. आर. (1995). जवाहरलाल नेहरू: एक जीवनी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. पटेल, पी. एन. (2000). सरदार पटेल: जीवन और विचार. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
13. पांडेय, बी. एन. (1998). भारत का राष्ट्रीय आंदोलन. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
14. प्रकाश, ओम. (2015). भारतीय राजनीति का विकास. नई दिल्ली: ग्रंथ अकादमी।
15. भार्गव, राजीव. (2008). भारतीय लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. मजूमदार, आर. सी. (1977). भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास. नई दिल्ली: भारतीय विद्या भवन।
17. मेनन, वी. पी. (1956). भारतीय रियासतों का एकीकरण. नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।
18. यादव, के. सी. (2010). आधुनिक भारत का इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
19. शर्मा, रामशरण. (1998). प्राचीन भारत. नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।
20. सुमित सरकार. (1983). आधुनिक भारत. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।